Faizane Imam Ali Razaa (Hindi)

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या के
आठवें बुज़ुर्ग का तज़्किरा

हफ़्तावार रिसाला : 294
Weekly Booklet : 294

फ़ैज़ाने इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात 24

- ख़ानदाने सादात की बरक़ात 02
- ज़मीनो आस्मान में रज़ा 04
- इमाम अ़ली रज़ा की दस करामात 08
- इमाम अ़ली रज़ा की इल्मी शान 15

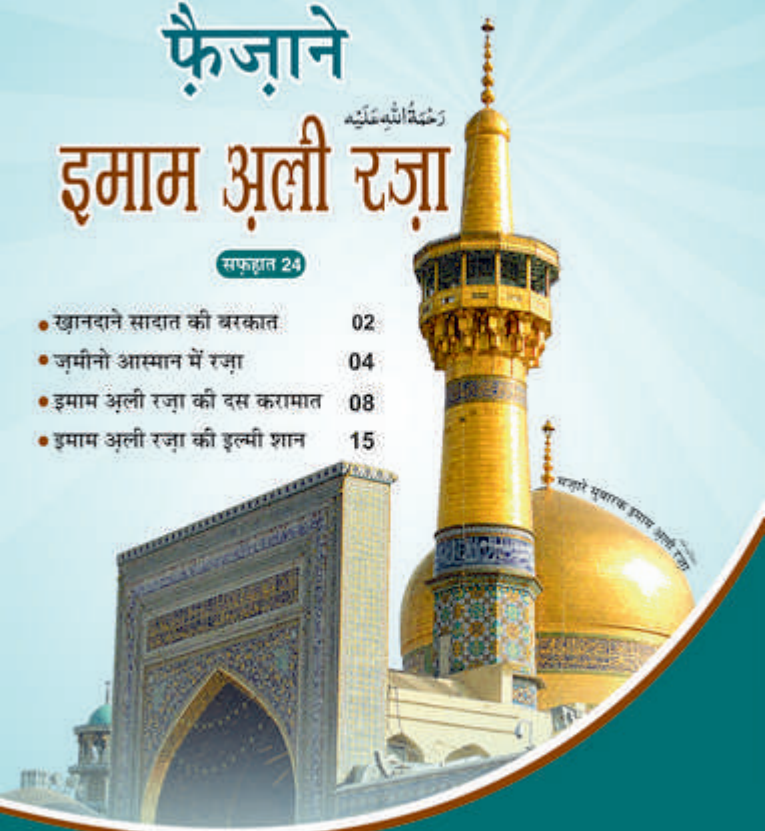

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने इमाम अ़ली रज़ा** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक 1444 हि., एप्रिल 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने इमाम अ़ली रज़ा** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने इमाम अ़ली रज़ा"** पढ़ या सुन ले, उस को सह़ाबा व अहले बैत की मह़ब्बत से मालामाल फ़रमा और वालिदैन व ख़ानदान समेत उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

(مسلم، ص172، حدیث:912)

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह रस्साअ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रह़मत इन्आ़म को कहते हैं (इस रिवायत का मत़लब येह है कि) **अल्लाह** पाक दुन्या व आख़िरत में बन्दे को लगातार इन्आ़मात से नवाज़ता है । क़ाज़ी अबू अ़ब्दुल्लाह सक्काकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम की "एक रह़मत" दुन्या और जो कुछ दुन्या में है उस से बेहतर है तो तुम उस के बारे में क्या गुमान करते हो जिसे **अल्लाह** करीम दस रह़मतों से नवाज़े, **अल्लाह** पाक दस रह़मतों से उस बन्दे से कितनी आफ़तें, मुसीबतें दूर फ़रमाएगा और उन दस रह़मतों से कितनी बरकतें ह़ासिल होंगी । शैख़ अबू अ़त़ाउल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम जिस पर एक रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा वोह उस की दुन्या व आख़िरत के सब मुआ़मलात में किफ़ायत

करेगी तो जिस पर दस रह़मतें नाज़िल हों उस का क्या आ़लम होगा ?

(مطالع المسرات، ص30)

रह़मत दा दरिया इलाही हर दम वगदा तेरा जे इक क़त़रा बख़्शे मेनूं कम बण जावे मेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ख़ानदाने सादाते किराम की बरकात

ख़ुरासान के मश्हूर शह्र नीशापूर के बाज़ार में एक ख़ूबरू (या'नी ह़सीन) नौ जवान की आमद हुई तो साएबान की वज्ह से दीवानगाने शौक़ ज़ियारत से मह़रूम थे। दो ह़ाफ़िज़ाने ह़दीस के साथ बे शुमार त़ालिबाने इ़ल्मो ह़दीस ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर गिड़गिड़ा कर अ़र्ज़ करने लगे : या सय्यिदी ! अपना नूरानी चेहरा दिखा कर अपने आबाए किराम से एक ह़दीसे पाक हमारे सामने बयान फ़रमा दीजिये। सुवारी रोकी और ग़ुलामों को हुक्म फ़रमाया : पर्दा हटा लें। ख़ल्क़े ख़ुदा की आंखें जमाले मुबारक के दीदार से ठन्डी हुईं। सुन्नते रसूल की ह़सीन तस्वीर थी, मुबारक कन्धों पर ज़ुल्फ़ें लहरा रही थीं। पर्दा हटते ही ख़ल्क़े ख़ुदा की वोह ह़ालत हुई कि कोई चिल्लाता, कोई रोता, कोई ख़ाक पर लोटता तो कोई मुबारक सुवारी का सुम चूमता था। इतने में उ़लमाए किराम ने आवाज़ दी : ख़ामोश ! सब लोग ख़ामोश हो गए। ह़ाफ़िज़े ह़दीस ह़ज़रते इमाम अबू ज़ुरआ़ राज़ी और ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन अस्लम त़ूसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا ने ह़दीसे पाक रिवायत करने की अ़र्ज़ की : वोह ह़सीनो जमील नौ जवान ख़ानदाने नुबुव्वत के चश्मो चराग़, बाग़े मुर्तज़ा के फूल और सय्यिदह फ़ात़िमा ज़ह़रा के शहज़ादे सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के 8वें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे। दरियाए रह़मत जोश में आया और आप ने ह़दीसे पाक बयान करना शुरूअ़ फ़रमाई :

حَدَّثَنِيْ اَبِيْ مُوْسَى الْكَاظِمِ عَنْ اَبِيْهِ جَعْفَرِ الصَّادِقِ عَنْ اَبِيْهِ مُحَمَّدِ الْبَاقِرِ عَنْ اَبِيْهِ زَيْنِ الْعَابِدِيْنَ عَنْ اَبِيْهِ الْحُسَيْنِ عَنْ اَبِيْهِ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ حَدَّثَنِيْ حَبِيْبِيْ وَقُرَّةُ عَيْنِيْ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ حَدَّثَنِيْ جِبْرِيْلُ قَالَ سَمِعْتُ رَبَّ الْعِزَّةِ يَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ حِصْنِيْ فَمَنْ قَالَهَا دَخَلَ حِصْنِيْ وَمَنْ دَخَلَ حِصْنِيْ اَمِنَ مِنْ عَذَابِيْ

तरजमा : इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे मेरे वालिदे मोह़तरम इमाम मूसा काज़िम ने ह़दीसे पाक बयान की, उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम इमाम जा'फ़रे सादिक़ से, उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम इमाम मुह़म्मद बाक़िर से, उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन से, उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम इमामे हुसैन से, उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से, आप फ़रमाते हैं : "मेरे ह़बीब और मेरी आंखों की ठन्डक **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से ह़दीसे पाक बयान फ़रमाई कि जिब्रील ने मुझे रिवायत बयान की, कि मैं ने **अल्लाह** पाक को फ़रमाते सुना कि "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ" मेरा क़ल्आ़ है, जिस ने इसे कहा वोह मेरे क़ल्ए़ में दाख़िल हुवा, मेरे अ़ज़ाब से अमान में रहा।"

येह ह़दीसे पाक बयान फ़रमाते ही पर्दा छोड़ दिया गया और ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ ले गए, इस ह़दीसे पाक को लिखने वाले गिने गए तो 20 हज़ार से ज़ियादा थे। (الصواعق المحرقہ، ص205)

सनद शरीफ़ की बरकत

करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह मुबारक सनद[1] अगर पागल पर पढ़ूं तो ज़रूर उसे पागल पन से शिफ़ा हो। (الصواعق المحرقہ، ص205)

1... रावियों का वोह सिल्सिला जो मत्न तक ले जाए, उसे सनद कहते हैं।
(निसाबे उसूले ह़दीस, स. 28)

नाम तेरा शहा हर मरज़ के लिये नाम लेवों को तेरे दवा हो गया

(क़बालए बख़्शिश, स. 72)

विलादते बा सआ़दत (Holy Birth)

ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का "सियरु आ'लामिन्नुबला" में विलादत शरीफ़ का साल 148 हि. बयान किया गया है, इसी साल आप के दादाजान ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा (سیر اعلام النبلاء، 8/248) जब कि बा'ज़ कुतुब में आप का सिने विलादत 153 हि. भी है। (شواہد النبوۃ، ص474) आप का नाम मुबारक "अ़ली", कुन्यत "अबुल ह़सन" है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अल्क़ाबात साबिर, ज़की (या'नी समझदार) और रज़ा है (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या बरकातिया, स. 165) जब कि एक लक़ब ज़ामिन या'नी ज़िम्मेदार भी है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 382) कहा गया है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه छे, सात या आठ शव्वालुल मुकर्रम को जुमुआ़ के दिन मदीनए पाक में पैदा हुए। (وفیات الاعیان، 2/236)

ज़मीनो आस्मान में रज़ा

"शवाहिदुन्नुबुव्वह" में है : ह़ज़रते अबी जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने आप का नाम "अरिज़ा" रखा क्यूं कि वोह आस्मानों में **अल्लाह** पाक की और ज़मीन में **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा थे। (شواہد النبوۃ، ص474)

ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आप की वालिदए मोह़तरमा आप की दादीजान ह़ज़रते बीबी हुमैदा बर्बरिय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْها की कनीज़ थीं, एक रात ह़ज़रते बीबी हुमैदा बर्बरिय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْها को ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी

नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी इस कनीज़ को अपने बेटे मूसा काज़िम के निकाह़ में दे दो। **अल्लाह** पाक इस से एक ज़मीन में सब से बेहतर शख़्स को पैदा करेगा। (شواہد النبوۃ، ص475)

पैदा होते ही दुआ़

आप की वालिदए मोह़तरमा फ़रमाती हैं : जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मेरे पेट में थे उस वक़्त मुझे किसी क़िस्म का बोझ महसूस न हुवा और सोते वक़्त मुझे अपने पेट में سُبْحٰنَ الله और **अल्लाह अल्लाह** की आवाज़ सुनाई देती थी। मुझ पर एक हैबत सी छा जाती थी और मैं बेदार हो जाती तो फिर कोई आवाज़ सुनाई न देती। जब ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत (Birth) हुई तो आप ने अपने मुबारक हाथ ज़मीन पर रखे और आस्मान की त़रफ़ मुंह उठाया और होंट मुबारक ह़रकत कर रहे थे, ऐसा लगता था कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ कर रहे हैं। (مسالک السالکین، 1/229)

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को रोज़ाना पढ़ने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का जो शजरा शरीफ़ अ़त़ा फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम, आप के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा और आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के वसीले से यूं दुआ़ की गई है :

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वासित़े

अल्फ़ाज़ मआ़नी : सिद्क़ : सच । **सादिक़ :** सच्चा । **तसद्दुक़ :** सदक़ा । **सादिकुल इस्लाम :** सच्चा मुसल्मान ।

दुआ़इया शे'र का मफ़्हूम : या अल्लाह पाक ! तुझे ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सच्चाई का वासित़ा ! मुझे ईमान की सलामती अ़त़ा फ़रमा दे और ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम और इन के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े बिग़ैर ग़ज़ब फ़रमाए मुझ से राज़ी हो जा । أمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلى الله عليه واله وسلم

बारगाहे इमाम अ़ली रज़ा में इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

ضامن ثامن رِضا بر مَن نگاہے از رضا
خشم را شایانم و گویم رِضا امداد کن

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 331)

तरजमा : ऐ हमारे आठवें इमामे ज़ामिन या'नी ज़मानत फ़रमाने वाले ! मुझ पर अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी की निगाह फ़रमा दीजिये, मैं डांट का मुस्तह़िक़ हूं लेकिन मैं आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ करता हूं या इमाम अ़ली रज़ा ! मेरी मदद कीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अ़रबी शजरा

अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक त़वील अ़रबी शजरा शरीफ़, ब सीग़ए दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى السَّيِّدِ الْاِمَامِ عَلِيِّ بْنِ مُوْسَى الرِّضَا رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا''

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और सरदार व मौला इमाम अ़ली बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا पर दुरूदो सलाम भेज और उन पर बरकत नाज़िल फ़रमा। (तारीख़ व शर्हे शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 108)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सीरते मुबारक

ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه निहायत ज़हीन और ख़ूब सूरत थे। आप कसीरुस्सौम (या'नी ज़ियादा रोज़े रखने वाले) और क़लीलुन्नौम (या'नी कम सोने वाले) थे। अंधेरी रात में राहे ख़ुदा में ख़ैरात करते। आ़जिज़ी व सादगी का येह आ़लम था कि गरमी के मौसिम में चटाई पर और सर्दी के मौसिम में टाट या कम्बल वग़ैरा पर तशरीफ़ फ़रमा हुवा करते और ग़ुलामों के साथ बैठ कर एक ही दस्तर ख़्वान पर खाना खाते।

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 166 मुल्तक़त़न)

सवाब का काम क्यूं छोड़ूं ? (वाक़िआ़)

एक सिपाही जो आप को जानता न था, वोह आप से कोई ख़िदमत लेने लगा, इतने में एक शख़्स जो आप को पहचानता था उस ने बुलन्द आवाज़ से सिपाही को पुकार कर कहा : ऐ शख़्स ! तू हलाक हुवा, तू **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बेटे से ख़िदमत लेता है ? जब सिपाही को आप की बुलन्द शान की पहचान हुई तो क़दमों में गिर कर मुआ़फ़ी मांगते हुए अ़र्ज़ करने लगा : या सय्यिदी ! जब मैं ने आप को ख़िदमत करने का अ़र्ज़ किया था आप ने मन्अ़ क्यूं न फ़रमाया ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बड़ा ख़ूब सूरत जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जिस काम में मुझे सवाब मिले मैं वोह काम क्यूं न करूं ?" (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 166 मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! आप ने इमामे पाक की आ़जिज़ी देखी ? अ़ज़ीम शानो शौकत के मालिक होने के बा वुजूद ख़िदमत से भी न शरमाए और कितना ख़ूब सूरत जवाब दिया । काश ! हम भी सवाब ह़ासिल करने वाले काम करें और ऐसे कामों, ऐसी बैठकों से बचें जो नेकियां दिलाने वाले कामों से मह़रूम करें ।

हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बे शुमार करामात हैं । चन्द करामाते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पढ़ें और अपने दिलों में इमामे आ़ली मक़ाम की मह़ब्बत बढ़ाएं ।

"इमाम अ़ली रज़ा" के दस हुरूफ़ की निस्बत से दस करामात

﴾1﴿ दिल की बात जान ली

कूफ़े के रहने वाले एक शख़्स का बयान है : मैं जब ख़ुरासान जाने के लिये कूफ़े से बाहर निकला तो मेरी लड़की ने मुझे एक बेहतरीन कपड़ा दे कर कहा : इसे फ़रोख़्त (Sale) कर के मेरे लिये एक फ़ीरोज़ा ख़रीद लाना । जब मैं मर्व नामी अ़लाक़े में पहुंचा तो ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़ादिमों ने मुझ से आ कर फ़रमाया : हमारा एक रफ़ीक़ इन्तिक़ाल कर चुका है, उस के कफ़न के लिये येह कपड़ा हमें बेच दो । मैं ने कहा : मेरे पास कोई कपड़ा नहीं । येह सुन कर वोह चले गए लेकिन थोड़ी देर बा'द फिर आए और कहने लगे : हमारे आक़ा ने तुझे सलाम इर्शाद फ़रमा कर बताया है कि तुम्हारे पास एक कपड़ा है जो तुम्हारी लड़की ने तुम्हें दिया था ताकि उसे तुम फ़रोख़्त (Sale) कर दो और उस के लिये फ़ीरोज़ा ख़रीद सको । हम उस की क़ीमत ले कर आए हैं । मैं ने कपड़ा दे

दिया और इस के बा'द अपने दिल में सोचा कि चन्द मसाइल आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछता हूं, क्या जवाब देते हैं, फिर मैं चन्द मसाइल एक काग़ज़ पर लिख कर अगले दिन सुब्ह़ सवेरे आप के मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हो गया, वहां बहुत ज़ियादा लोग जम्अ़ थे मगर किसी की क्या मजाल कि वोह आसानी से मुलाक़ात कर सके, मैं ह़ैरानो परेशान खड़ा था कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक ख़ादिम बाहर आया और मेरा नाम ले कर एक काग़ज़ मुझे दे कर कहने लगा : ऐ फ़ुलां ! येह सुवालात के जवाबात हैं । जब मैं ने उस काग़ज़ को खोल कर तह़रीर का मुत़ालआ़ किया तो वोह वाक़ेई मेरे सुवालात के जवाबात थे । (شواہد النبوۃ، ص 484)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ तेज़ हवा ने ता'ज़ीम पेश की

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आ़दते करीमा थी कि आप जब ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद के घर मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाते तो दरवाज़े पर मौजूद ख़ादिमों की पर्दा हटाने की ज़िम्मेदारी होती, येह सब और दूसरे ख़ादिमीन आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इस्तिक़्बाल करते और सलाम अ़र्ज़ करते फिर पर्दा हटाते ताकि आप अन्दर तशरीफ़ ला सकें । जब मामूनुर्रशीद ने अपने बा'द इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को वली अ़ह्द मुक़र्रर किया तो मामून के दाएं बाएं बैठने वालों में कुछ लोग ऐसे थे जिन्हें येह अच्छा न लगा । इस सोच की वज्ह से उन्हें مَعَاذَ الله ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से चिड़ पैदा हो गई । उन लोगों ने आपस में

मश्वरा किया कि अब जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "ख़लीफ़ा" से मिलने आएंगे तो हम मुंह मोड़ लेंगे और दरवाज़ों के पर्दे नहीं उठाएंगे। इस पर सब मुत्तफ़िक़ हो गए, अभी वोह येह मश्वरा कर के बैठे ही थे कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए और अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ मुलाक़ात करने अन्दर आने लगे तो उन लोगों को अपने मश्वरे पर अ़मल करने की हिम्मत न पड़ी चुनान्चे सब खड़े हुए, इस्तिक़्बाल किया और दरवाज़ों के पर्दा भी पहले की त़रह़ उठाए। जब आप अन्दर तशरीफ़ ले गए तो वोह एक दूसरे को मलामत करने लगे तुम ने अपने मन्सूबे और मश्वरे पर अ़मल नहीं किया। फिर येह तै़ पाया कि अब जो हो गया सो हो गया आइन्दा अगर आए तो फिर लाज़िमन हम अपने मश्वरे पर अ़मल करेंगे। जब दूसरे दिन आप ह़स्बे आ़दत तशरीफ़ लाए, अब की बारी येह खड़े तो हो गए, सलाम भी किया लेकिन पर्दे न उठाए, फ़ौरन तेज़ हवा चली, उस ने पर्दों को उठा दिया और आप अन्दर तशरीफ़ ले गए, फिर बाहर निकलते वक़्त भी तेज़ हवा ने आप की ख़ातिर पर्दे उठा दिये। अब येह सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे और कहने लगे : "**अल्लाह** करीम के नज़्दीक इस शख़्स का बड़ा मरतबा है और उस की इन पर बड़ी मेह्रबानी है, देखो कि हवा कैसे आई और इन के अन्दर जाते वक़्त किस त़रह़ पर्दों को उठा दिया लिहाज़ा अपने मश्वरे को छोड़ो और दोबारा अपनी अपनी ड्यूटी दो।" (جامع کرامات اولیاء، 2/312)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ सतरह खजूरें

एक शख़्स ने बयान किया कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की, कि आप हमारे शह्र में तशरीफ़ लाए हैं और जिस मस्जिद में ह़ाजी ठहरते हैं वहां क़ियाम फ़रमा हैं। मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक बड़ी प्लेट मौजूद थी। जिस में सैह़ानी खजूरें थीं। **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन में से एक मुठ्ठी बराबर खजूरें मुझे इ़नायत फ़रमाईं। मैं ने उन्हें गिना तो वोह (17) खजूरें थीं। मैं ने येह ता'बीर निकाली कि मेरी उ़म्र अभी सतरह साल बाक़ी है, इस वाक़िए़ के चन्द दिनों बा'द मैं ने सुना कि ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस मस्जिद में तशरीफ़ लाए हैं तो मैं फ़ौरन आप की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा। मैं ने आप को उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा देखा जहां नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वा फ़रमा थे। आप के पास भी उसी त़रह़ का एक बड़ा बरतन मौजूद था। मैं ने आगे बढ़ कर सलाम अ़र्ज़ किया तो आप ने सलाम का जवाब अ़त़ा फ़रमा कर मुझे अपने नज़्दीक बुला कर एक मुठ्ठी खजूरें अ़त़ा फ़रमाईं, मैं ने उन्हें शुमार किया तो वोह सतरह निकलीं। मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ इब्ने **रसूलुल्लाह** ! मुझे तो इस से ज़ियादा खजूरों की त़लब है।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुझे इस से ज़ियादा इ़नायत फ़रमाते तो मैं भी ज़ियादा दे देता। (جامع کرامات اولیاء، 2/311)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दिल की जो बात जान ले रोशन ज़मीर है उस मर्दे बा सफ़ा को हमारा सलाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾4﴿ मरने की ख़बर दे दी

ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स को देखा तो फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! जो चाहता है उस की वसिय्यत कर और जिस चीज़ (या'नी मौत) से डरता नहीं उस के लिये तय्यार हो जा। इस बात को तीन ही रोज़ गुज़रे थे कि वोह शख़्स फ़ौत हो गया। (شواہد النبوۃ، ص486)

﴾5﴿ अ़रबी ज़बान का अ़ता करना

अबू इस्माईल सिन्धी नामी शख़्स ने बयान किया कि मैं ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो अ़रबी का "अलिफ़" तक नहीं जानता था, मैं ने आप को सिन्धी में सलाम किया, आप ने भी मुझे सिन्धी ही में जवाब दिया। इस के बा'द मैं ने अपनी ज़बान में कई सुवाल किये, आप ने तमाम सुवालात का जवाब मेरी ज़बान में दिया। फिर मैं ने वापस आते वक़्त अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! मैं अ़रबी नहीं जानता। आप दुआ़ फ़रमाएं कि मैं अ़रबी बोलना सीख जाऊं। आप ने अपना हाथ मुबारक मेरे होंटों पर फेरा तो मैं उसी वक़्त अ़रबी में गुफ़्तगू करने लगा। (شواہد النبوۃ، ص487) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾6﴿ चिड़िया की फ़रियाद सुन ली

एक साह़िब बयान करते हैं : मैं एक रोज़ ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ एक बाग़ में गुफ़्तगू कर रहा था कि अचानक एक

चिड़िया आ कर ज़मीन पर गिर गई और परेशानी की ह़ालत में आहो ज़ारी करने लगी। ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने देख कर फ़रमाया : ऐ शख़्स तुझे पता है कि चिड़िया ने क्या कहा ? मैं ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक और उस का रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इब्ने **रसूलुल्लाह** ही को इस का इ़ल्म है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : चिड़िया कहती है कि इस के घर में एक सांप आ गया है जो इस के बच्चों को खाना चाहता है। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुझे फ़रमाया : उठो ! और उस सांप को हलाक कर दो। मैं उठा और जा कर देखा तो वाक़ेई सांप मौजूद था। मैं ने उसे देखते ही अ़सा (Stick) से हलाक कर दिया। (شواہد النبوۃ، ص488)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾7﴿ दो बच्चे पैदा हुए

बक्र बिन सालेह़ कहते हैं : मैं ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मेरी ज़ौजा (Wife) उम्मीद से है, **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ कीजिये कि लड़का अ़त़ा हो। आप ने फ़रमाया : उस के पेट में दो बच्चे हैं। जब वोह पैदा हों तो एक का नाम मुह़म्मद और दूसरे का नाम उम्मे अ़म्र रखना। बक्र बिन सालेह़ कहते हैं : मैं कूफ़े आ गया। जैसे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया था वैसे ही मेरे हां दो बच्चे पैदा हुए। एक लड़का और एक लड़की, मैं ने लड़के का नाम मुह़म्मद और लड़की का नाम "उम्मे अ़म्र" रखा।

(جامع کرامات اولیاء، 2/313)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾8﴿ नमाज़ की बरकत से क़र्ज़ की अदाएगी

ख़ानदाने नुबुव्वत के गुलशन के महक्ते फूल ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बार बहुत मक़्रूज़ हो गए। क़र्ज़ ख़्वाहों का तक़ाज़ा बढ़ा तो आप ने सब क़र्ज़ ख़्वाहों को त़लब फ़रमाया और चटाई बिछा कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई। फिर उसी चटाई के नीचे से क़र्ज़ ख़्वाहों को क़र्ज़ देना शुरूअ़ फ़रमाया तो तक़्रीबन अड़तालीस (48) हज़ार दीनार का क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया। (مسالک السالکین، 1/232)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾9﴿ ज़िन्दा मुर्दा हो गया

एक बार कुछ लोग مَعَاذَ الله इम्तिह़ान लेने की बुरी निय्यत से एक ज़िन्दा शख़्स को मुर्दा बना कर आप के पास लाए कि आप नमाज़े जनाज़ा पढ़ दें। जब आप नमाज़ पढ़ा देंगे तो मुर्दा उठ खड़ा होगा और आप शरमिन्दा होंगे। जब आप ने नमाज़ पढ़ा दी और उन्हों ने चादर हटाई तो उस शख़्स को मुर्दा ह़ालत में पाया तो अपने किये पर निहायत शरमिन्दा हुए। बिल आख़िर रो धो कर उन्हों ने अपने मुर्दे को दफ़्न कर दिया, जब तीन दिन गुज़र गए तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस मुर्दे की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : قُمْ بِاِذْنِ الله या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से ज़िन्दा हो जा। तो उसी वक़्त वोह मुर्दा ज़िन्दा हो गया। (مسالک السالکین، 1/232)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾10﴿ वफ़ात से पहले बता दिया

एक साहिब बयान करते हैं : मैं अबुल ह़सन अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ मिना में था कि ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद का वज़ीर ''ख़ालिद बर्मकी''

वहां से गुज़रा। उस ने गर्दो ग़ुबार की वज्ह से अपना मुंह रूमाल में लपेटा हुवा था। ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उसे देख कर फ़रमाया : येह मिस्कीन लोग नहीं जानते कि इस साल इन के साथ क्या होने वाला है, इन का काम जो होगा सो होगा। फिर फ़रमाया : इस से भी ज़ियादा ह़ैरान कुन बात येह है कि मैं और हारूनुर्रशीद दो उंग्लियों की त़रह़ हैं। आप ने शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली मिला कर बताया। येह वाक़िआ़ बयान करने वाले कहते हैं : ख़ुदा की क़सम ! मुझे जनाबे अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की हारूनुर्रशीद के बारे में बात की समझ उस वक़्त आई जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा और उन्हें हारूनुर्रशीद के साथ दफ़्न किया गया। (جامع کرامات اولیاء، 2/313)

और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के — उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम
उन की बाला शराफ़त पे आ'ला दुरूद — उन की वाला सियादत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 314)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इल्म दानी और फ़िरासत

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बड़ी इ़ल्मी शानो शौकत से नवाज़ा था। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अक्सर सुवालात के जवाबात आयाते क़ुरआनी से दिया करते। इब्राहीम बिन अ़ब्बास कहते हैं : मैं ने आप से बड़ा कोई आ़लिम नहीं देखा। ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद अक्सर इम्तिह़ान के त़ौर पर आप से सुवाल करता और आप उस को तसल्ली बख़्श जवाब इ़नायत फ़रमाते। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 166)

कहा जाता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ज़माने में जवानी में फ़तावा या'नी शर्ई मसाइल के जवाबात दिया करते थे। (سیر اعلام النبلاء، 8/248) मामूनुर्रशीद आप को बड़ी क़द्र की निगाह से देखता था इसी वज्ह से उस ने अपनी बेटी का निकाह़ आप से किया। (الصواعق المحرقة، ص204)

आ़जिज़ी भरी दुआ़

अबू सल्त कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते अ़ली बिन मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मौक़िफ़ पर येह दुआ़ करते सुना : ऐ **अल्लाह** पाक ! जैसे तू ने मुझे अपनी रह़मत की चादर में छुपाया जिसे मैं नहीं जानता ऐसे ही तू मुझे बख़्शिश दे जो तू जानता है और जैसे तू ने मुझे वसीअ़ इ़ल्म से नवाज़ा है ऐसे ही मुझे अपने वसीअ़ अ़फ़्व से नवाज़, और जैसे तू ने अपनी मा'रिफ़त व पहचान अ़ता फ़रमा कर बुज़ुर्गी दी ऐसे ही तू इस के साथ अपनी मग़्फ़िरत भी मिला दे ऐ ज़ुल जलालि वल इक्राम ! (سیر اعلام النبلاء، 8/249)

राज़ों भरी किताबें

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه की दो किताबें जफ़र व जामिआ़[1] हैं, आप ने इन दोनों किताबों में इ़ल्मुल ह़ुरूफ़

1... आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जफ़र बेशक निहायत नफ़ीस जाइज़ फ़न है, ह़ज़राते अहले बैते किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِم का इ़ल्म है, अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने ख़वास पर इस का इज़्हार फ़रमाया और सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه इसे मा'रिज़े किताबत में लाए, किताबे मुस्तत़ाब जफ़र जामेअ़ तस्नीफ़ फ़रमाई। अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शर्ह़े मवाक़िफ़ में फ़रमाते हैं : इमाम जा'फ़रे सादिक़ ने जामेअ़ में मा का-न व मा यकून तह़रीर फ़रमा दिया।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/697)

की रविश पर दुन्या के ख़त्म होने तक जितने वाक़िआ़त होने वाले हैं सब बयान फ़रमा दिये। आप की औलादे पाक में से मश्हूर इमाम इन किताबों के राज़ जानते और इन से अह़काम बयान करते हैं चुनान्चे ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने जब ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा बिन इमाम मूसा काज़िम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا) को अपने बा'द ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने का ख़िलाफ़त नामा लिखा तो इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे क़बूल करते हुए जवाबी ख़त में लिखा : तुम ने हमारे ह़क़ पहचाने, इस लिये मैं तुम्हारी ख़िलाफ़त क़बूल करता हूं, मगर जफ़र व जामिआ़ बता रही हैं कि येह काम पूरा न होगा। (चुनान्चे ऐसा ही हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मामूनुर्रशीद की ज़िन्दगी ही में शहादत पाई।) (شرح مواقف، 6/23)

आमिना रम्लिया बिन्ते मूसा काज़िम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अहले बैते नुबुव्वत का येह मुबारक ख़ानदान करामात व विलायत का सर चश्मा था। चुनान्चे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बहन ह़ज़रते बीबी आमिना रम्लिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ज़रीए़ दुआ़ की दरख़्वास्त की तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने इस त़रह़ दुआ़ की : **या अल्लाह** पाक ! बिश्रे ह़ाफ़ी और अह़मद बिन ह़म्बल (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا) को जहन्नम के अ़ज़ाब से अमान दे। इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है कि उसी रात एक परचा आस्मान से हमारे घर आ गिरा जिस में बिस्मिल्लाह के बा'द येह लिखा हुवा था कि "हम ने बिश्रे ह़ाफ़ी और

अह़मद बिन ह़म्बल को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से अमान दे दी और हमारे यहां इन दोनों के लिये और भी ने'मतें हैं।" (جامع کرامات اولیاء، 1/384 ملخصاً)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हम ह़राम क़बूल नहीं करते

ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते बीबी आमिना बिन्ते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا) की क़ब्र शरीफ़ के पास रात के वक़्त तिलावते क़ुरआन की आवाज़ आया करती थी। एक मरतबा एक शख़्स दरबार के ख़ादिम के पास कुछ ज़ैतून का तेल लाया और ख़ादिम से अ़ह्द लिया कि येह सारा तेल एक ही रात में जलाना, ख़ादिम ने क़िन्दीलों में तेल डाला और जलाना चाहा मगर आग न जली, ख़ादिम बहुत ह़ैरान हुवा, सोया तो ह़ज़रते बीबी आमिना बिन्ते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا ख़्वाब में तशरीफ़ लाईं और इर्शाद फ़रमाया : उसे तेल वापस कर दो, क्यूं कि हम सिर्फ़ पाक और ह़लाल माल क़बूल करते हैं, उस से पूछें : येह तेल कहां से लाया है ? सुब्ह़ हुई तो ख़ादिम तेल लाने वाले के पास पहुंचा और उसे कहा : अपना तेल वापस ले लो। वोह कहने लगा : क्यूं ? ख़ादिम ने जवाब दिया : इसे आग नहीं पकड़ती और ह़ज़रते बीबी आमिना बिन्ते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا ने मुझे ख़्वाब में हुक्म फ़रमाया है कि हम सिर्फ़ पाक माल ही क़बूल करते हैं। तेल लाने वाले ने ख़ादिम से कहा : ह़ज़रते बीबी आमिना बिन्ते

सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا) ठीक फ़रमाती हैं, मैं काहिन (या'नी जिन्नों से मा'लूम कर के ख़बरें देने वाला) हूं, फिर वोह तेल ले कर चलता बना। (جامع کرامات اولیاء، 1/384 ملخصاً)

ग़ैरे सय्यिद पीर हो सकता है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग येह ख़याल करते हैं कि सिर्फ़ आले रसूल या'नी सादाते किराम ही पीर हो सकते हैं, ग़ैरे सय्यिद पीर नहीं हो सकता। येह ख़याल दुरुस्त नहीं है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : (पीर होने के लिये सय्यिद और आले रसूल होने को ज़रूरी समझना) येह महज़ बात़िल है, पीर होने के लिये वोही चार शर्तें[1] दरकार हैं, सादाते किराम से होना कुछ ज़रूर नहीं। हां ! इन शर्तों के साथ सय्यिद भी हो तो नूरुन अ़ला नूर। बाक़ी इसे शर्त ज़रूरी ठहराना तमाम सलासिले त़रीक़त का बात़िल करना है। सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या सिल्सिलतुज़्ज़ह़ब (या'नी सुनह़रे सिल्सिले) में सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा और ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के दरमियान जितने ह़ज़रात हैं कोई सादाते किराम से नहीं और सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिय्या में तो अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه के बा'द ही से इमाम ह़सन बसरी (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) हैं कि न सय्यिद न क़ुरैशी न अ़रबी और

1... (1) सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हो। (2) इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताबों से निकाल सके। (3) फ़ासिक़े मो'लिन न हो। (एक बार गुनाहे कबीरा करने वाला या गुनाहे सग़ीरा पर इसरार करने वाला या'नी तीन या इस से ज़ियादा बार करने वाला या सग़ीरा को सग़ीरा समझ कर एक बार करने वाला फ़ासिक़ होता है और अगर अ़लल ए'लान करे तो फ़ासिक़े मो'लिन है।) (4) उस का सिल्सिलए बैअ़त नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) हो। (फ़तावा रज़विय्या, 21/603)

सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिय्या का ख़ास आग़ाज़ ही हुज़ूर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه से है, इसी त़रह़ दीगर सलासिल ।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/576)

मिला सिल्सिला क़ादिरी फ़ज़्ले रब से मैं हूं किस क़दर बख़्त वर ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अ़ली रज़ा ! अल्लाह पाक ने ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को बड़ी मक़्बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाई है। आप की नेकी की दा'वत से बे शुमार कुफ़्फ़ार मुसल्मान हुए। सिल्सिलए क़ादिरिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग और आप के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आप ही की दा'वत पर मुसल्मान हुए और आस्माने विलायत के रोशन सितारे बन कर चमके। (शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 64)

मैं शान बयान नहीं कर सकता

अ़रब के मश्हूर शाइ़र अबू नुवास से किसी ने कहा कि तुम ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शहज़ादे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में कुछ शे'र क्यूं नहीं कहते ? अबू नुवास ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शाने बुलन्द निशान में कुछ ता'रीफ़ी अश्आ़र पेश करते हुए अ़र्ज़ किया :

قُلْتُ لَا اَسْتَطِيْعُ مَدْحَ اِمامٍ كَانَ جِبْرِيْلُ خَادِماً لِاَبِيْهِ

या'नी मैं ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शानो अ़ज़मत कैसे बयान कर सकता हूं जब कि फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप के वालिदे मोह़तरम (या'नी हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ख़ादिम हैं । (وفیات الاعیان، 2/237)

औलादे मुबारक

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पांच साहिब ज़ादे और एक साहिबा ज़ादी थी। उन के मुबारक नाम येह हैं : ह़ज़रते इमाम तक़ी, जा'फ़र, ह़सन, हुसैन, इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم और शहज़ादी का मुबारक नाम आइशा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا था। (مسالک السالکین، 1/235)

ज़लील दुन्या की महब्बत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की महब्बत अन्धी होती है, इसी कमीनी दुन्या के इ़श्क़ में मस्त हो कर किसी ना बकार ने सय्यिदुल अस्खि़या, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه को भी कई बार ज़ह्र दिया और आख़िर ज़ह्र ख़ूरानी ही वफ़ात का बाइ़स बनी। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन बराअ رَضِیَ اللهُ عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वफ़ाते ह़सरत आयात का सबब भी ज़ह्र हुवा। (आ़शिक़े अक्बर, स. 42)

दफ़्न होने की जगह बयान फ़रमा दी

एक शख़्स का बयान है : मैं ने ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मदीनए मुनव्वरह में देखा। मस्जिद में हारूनुर्रशीद ख़ुत्बा दे रहा था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे और इस (हारून) को तुम देखोगे कि एक ही घर में हम दोनों दफ़्न किये जाएंगे। इसी त़रह़ एक मरतबा हारूनुर्रशीद मस्जिदे ह़राम के एक दरवाज़े से बाहर आया और ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दूसरे दरवाज़े से बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ वोह शख़्स ! जो घर के ए'तिबार से मुझ से दूर है लेकिन मेरी तेरी मुलाक़ात की जगह एक ही है। बेशक तूस मुझे और तुझे दोनों को जम्अ़ कर देगी।

(جامع کرامات اولیا، 2/312)

मौत के वक़्त ख़ूराक बता दी

अहले बैते नुबुव्वत के चश्मो चराग़ ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी वफ़ात शरीफ़ से पहले फ़रमाया : मैं फ़ौत से क़ब्ल अंगूर और अनार खाऊंगा। फिर ऐसे ही हुवा। (جامع کراماتِ اولیاء، 2/311) बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ 21 रमज़ानुल मुबारक 203 हि. 55 बरस की उ़म्र में ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को अंगूरों में ज़हर मिला कर दिया गया जिस से आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शहादत वाक़ेअ़ हुई। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ "मश्हदे मुक़द्दस" नामी मक़ाम पर ईरान में है।

(تہذیب الکمال، 21/152, तज़्किरए मशाइख़े क़ादरिय्या रज़विय्या, स. 175)

जिस मुसल्मां ने देखा उन्हें इक नज़र

उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 313)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला